# बेहतर कृषि कार्य, जमीन की तैयारी, जुताई कार्य एवं सावधानियां

## किसानों के लिये मार्गदर्शिका

किसानों के लिये मार्गदर्शिका

RESEARCH TRAINING AND DEVELOPMENT
CDECS
PUTTING THE LAST FIRST

मुख्य कार्यालयः

**सेन्टर फॉर डवलपमेंट कम्यूनिकेशन एण्ड स्ट्डीज ( सीडेक्स ), जयपुर**

133 (First Floor), Devi Nagar, New Sanganer Road, Sodala, Jaipur 302019

Fax-0141-2294988; Phone :0141-2294988/9414077287

**cdecsjpr@yahoo.in, cdecsjpr@gmail.com**

# कृषि जीवन का आधार

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा राज्य है। राज्य का क्षेत्रफल 3 करोड़ 42 लाख हैक्टर है जिसमें कृषिमय क्षेत्र लगभग 60 प्रतिशत है। राज्य का मुख्य व्यवसाय कृषि ही है। राज्य के 33 जिलों को जलवायुवीय खण्ड ; ।हतव बसपउंजपबद्ध वदमद्ध के आधार पर लगभग दस भागों में बांटा गया है। राज्य में भूजलस्तर का निरन्तर गिरना सभी के लिए चिन्ताजनक है। जहॉ तक भूजल स्तर के गिरने का कारण जाने तो सामने एक ही बात आती है कि राज्य में हर तीसरे या चौथे वर्ष में कम वर्षा के कारण अकाल की स्थितियां बनती रहती है एवं राज्य में जल प्रदूषण भी हो रहा है । हमारे राज्य में खरीफ की फसल उत्पादन वर्षा पर ही निर्भर करता है। आज राजस्थान में कृषि की स्थिति को देखें तो ज्ञात होगा कि 13.27 प्रतिशत भाग देश की कुल उपलब्ध कृषि भूमि का भाग है। आज राजस्थान में तिलहनों का उत्पादन प्रदेश की आवश्यकता से अधिक है। राज्य में कृषकों द्वारा दलहनी फसलों के उत्पादन हेतु प्रयास किए जा रहे हैं लेकिन राज्य की कृषि में उपलब्ध संभावनाओं को मूर्त रुप में परिणित करना आवश्यक है।यह भी कहां जा सकता है कि कृषि अर्थव्यवस्था का पुनरुद्धार अपेक्षित है।

राज्य में अधिकतम लोग कृषि पर ही निर्भर हैं एवं आय का मुख्य स्रोत भी यही है। बेहतर जीवन यापन हेतु आय के स्रातों में वृद्धि करने के अलावा कोई अन्य चारा नहीं है। अब किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती जमीन को उपजाऊ कैसे बनया जाए एवं आय में वृद्धि कैसे की जाए ? जहॉ तक भूमि को उपजाऊ बनाने की बात है तो यह सबसे आसान तरीका होगा कि जमीन को तैयार किस प्रकार से किया जाए इसके बारे में आम किसान को जानकारियां देकर तकनीकी रुप से सुदृढ़ बनाया जाए। बेहतर उत्पादन हेतु क्या–क्या किया जाना चाहिए एवं क्या सावधानियां रखी जाए इस प्रकार की तकनीकी जानकारी भी होनी चाहिए। उपरोक्त बातों से पता चलता है कि जमीन को उपजाऊ एवं योग्य बनाने के लिए तीन मुख्य बातें निकल कर आई हैं–1. जमीन को तैयार करना 2. जुताई कैसे करें 3. क्या सावधानियां रखें / तकनीकी जानकारी एवं उपयोग।

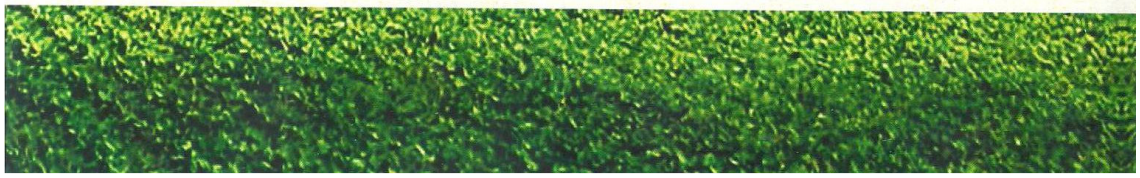

### 1. जमीन को तैयार करना:-

जमीन को उपजाऊ बनाने के लिए सबसे अहम बात है कि जमीन की उपजाऊ क्षमता को बढ़ाना अर्थात् जमीन को कृषि उत्पादन के योग्य बनाना ताकि जो भी बीज उसमें डाला जाए वह आसानी से उग सके या बीज में अंकुरण हो सके। इन सब के लिए जमीन की जुताई का कार्य सबसे अहम है। जमीन की जुताई किसान कब करता है एवं कब करना चाहिए यह सब जानकारी बहुत ही आवश्यक है। जैसाकि अक्सर देखने में आता है कि किसान बुवाई के समय ही जुताई का कार्य करते हैं। खेत की जुताई का कार्य तकनीकी दृष्टि से देखें तो ज्ञात होगा कि कीट –व्याधियों से बचाव एवं रोकथाम की दृष्टि से ज्यादा लाभकारी होता है। फसल की अच्छी उपज के लिए रबी की फसल कटाई के बाद गर्मियों के समय की जाने वाली जुताई को गहराई से करना एवं खेत को खाली रखना भी किसानों के लिए ज्यादा लाभकारी रहता है क्योंकि जमीन का अधिक तापमान होने के कारण कीट एवं उनके अण्डे,लट इत्यादि खत्म हो जाते हैं। सामान्यतः यह कहा जा सकता है कि किसानों को फसल में लगने वाली बीमारी से मुक्ति एवं कीड़े–बीमारियों पर होने वाले आर्थिक व्यय से भी राहत मिलेगी।

**जुताई कार्य कब करें-**

**फसल की कटाई के तुरन्त बाद करनी चाहिए क्योंकि उस समय मिट्टी में नमी रहती है जिससे जुताई आसानी से हो जाती है।**

**2. जुताई कैसे करें** - कई बार किसान भाई क्या सोचते हैं कि खेतों में जुताई कार्य के लिए तकनीक क्या जरुरत है । जुताई के लिए भी कोई तकनीक की जरुरत होती है। जी हां तकनीक से किए जाने वाले कार्यों से अधिक फायदे होते हैं एवं कोई भी किसान सामान्य जानकारियों से कार्य करके भी अपने लाभ एवं खतरों से निजात पा सकते हैं। जैसे गर्मियों में खेत की जुताई कार्य तकनीकी तौर से करके अपने द्वारा पैदा की जाने वाली फसल की मात्रा को अधिक कर सकते हैं। फसल की अधिकता के साथ साथ फसल में होने वाली बीमारियों से किसी हद तक छुटकारा पा सकते है। इसलिए जुताई करते समय किसान भाईयों को ध्यान रखना चाहिए कि –

- लगभग15 से.मी. अर्थात् 1¼फीट गहराई तक करनी चाहिए।
- खेत का ढ़लान जिस दिशा में हो तो उसके विपरीत दिशा में ढ़लान को काटते हुए जुताई करना चाहिए। जिससे कि वर्षा का पानी व मिट्टी न बह पाये।
- अगर ट्रेक्टर से जुताई कार्य करना हो तो ध्यान रहे कि तवेदार मोल्ड बोर्ड हल जुताई के लिए उपयुक्त है।

### 3. क्या सावधानियां रखें / तकनीकी जानकारी-

गर्मियों की जुताई के लिए बहुत सी छोटी–छोटी बातें हैं उनका ध्यान रखना चाहिए कि क्षेत्र में किस प्रकार की मिट्टी है उसी के आधार पर यह निर्णय लिया जाता है। ज्याद रेतीले इलाकों में गर्मियों की जुताई का कार्य नहीं करना चाहिए। इस प्रकार के क्षेत्रों में मिट्टी कटाव की समस्या हो जाती है। जुताई कार्य में सबसे प्रमुख बात यह भी है कि जुताई में बड़े बड़े ढ़ेले रहे तो मिट्टी में कटाव की समस्या कम हो जाती है।

## गर्मियों की जुताई के फायदे-

सूर्य की तेज किरणे भूमि में प्रवेश करती जिससे कीटों के अण्डे,लटें,शंकु आदि नष्ट हो जाते है। फसलों में उगने वाला उखटा,जड़ गलन आदि रोगों के रोगाणु नष्ट हो जाते है। खेत में ढ़ेले बन जाने से वारिष के जल को सोखने की क्षमता बढ़ जाती है जिससे खेतों में ज्यादा समय तक नमी बनी रहती है। गहरी जुताई से खेतों में होने वाली (मौथा,दूब,कांस) खरपतवारों से मुक्ति पाई जा सकती है। खेतों में दी जाने वाली प्राकृतिक खाद व खेत में उपलब्ध अन्य कार्बनिक पदार्थ जमीन में आसानी से मिल जाते हैं जिससे फसलों को शीघ्र ही पोषक तत्व उपलब्ध हो जाते हैं। पानी द्वारा होने वाले भूमि कटाव में भारी कमी होती है।

**कुछ सामान्य बाते और भी जिनका कृषि में विशेष महत्त्व है जैसे-**

- समय पर बुवाई करें।
- कीट तथा रोग प्रकोप में कमी लाने के लिए फसलें बदल–बदल कर बोयें।
- रासायनिक उर्वरकों से होने वाले कुप्रभावों से बचने के लिए जैविक खेती अपनायें।
- कृषि कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ायें, नवीनतम जानकारी लें, समस्या का समाधान पायें,उन्नत तकनीकी का प्रयोग कर उत्पादन बढ़ायें।
- खरपतवार,रोग के कीट के प्रकोप में कमी लाने के लिए गर्मी में गहरी जुताई (भारी मिट्टियों वाले क्षेत्र में) अवश्य करें।

**उत्पादकता वृद्धि हेतु उपरोक्त सभी तरीके हैं। किसान भाई अपनी आय के स्रोत बढ़ाना चाहते हैं तो खेती में क्या तकनीकी फायदेमंद हो सकती है समय समय पर उनका प्रयोग करते हुए कृषि कार्य करें। ऐसा करने पर निश्चित ही कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी।**